आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 2/जून 2025
Received: 20/05/2025; Accepted: 19/06/2025; Published: 28/06/2025

हिंदी कहानी के स्त्री लेखन में विकलांगों की पारिवारिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण

- इब्राक खान
शोध छात्र, दिल्ली विश्वविद्यालय
संपर्क: 8448550887
Email: ibrakkhan26121998@gmail.com

इब्राक खान, हिंदी कहानी के स्त्री लेखन में विकलांगों की पारिवारिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 2/जून 2025**,(75-80) https://doi.org/10.5281/zenodo.15767707

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जो पूरी तरह निर्दोष हो या पूरी तरह गुण रहित, जहाँ सभी प्राणियों में कुछ गुण पाए जाते हैं, तो उनमें कुछ दोष भी पाए जाते हैं। कहा गया है-

"दृष्टि किमपि लोकेडस्मिन न निर्दोष न निर्गुणम"

विकलांगता की समस्या उतनी ही प्राचीन है, जितनी मानव सभ्यता। समाज में विकलांगता को अलग-अलग नजरिए से देखा जाता है। कुछ लोग इसे पूर्व जन्मों के पापों का फल मानते हैं तो कुछ संरचना मात्र।यहाँ तक स्वयं दिव्यांगजन भी पूर्व जन्मों का फल मानकर स्वयं भोक्ता रहता है, किंतु अपने कष्ट को कम करने का कभी भी प्रयत्न नहीं करता है।

समाज में विकलांगों को अनेक प्रकार की (सामाजिक, राजनैतिक धार्मिक, आर्थिक) परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। सम्पूर्ण समाज दिव्यांगों को बड़ी मुश्किल से पारिवारिक एवं सामाजिक स्तर पर

स्वीकार करता है। हमारे समाज में विकलांगता को एक कलंक के रूप में देखा जाता है। दिव्यांगों के प्रति समाज का नकारात्मक रूप दिव्यांगों का जीवन कठिन कर देता है।

विकलांग के शब्दगत अर्थ की बात करें तो उसे अपाहिज, पंगु, अपंग , या कृपाल, हैंडिकैप्ड और आज कल के सरकारी शब्द भाषाविद **'डिसेबल्ड'** कहते हैं। सामान्य जन समुदाय अलग-अलग परिवेश में अपने मानसिक स्थिति जानने से उनका अर्थ भी अलग-अलग निकालते हैं। शारीरिक अथवा मानसिक अक्षमता व्यक्ति को विकलांगता की श्रेणी में लाकर खड़ा कर देती है। यह व्यक्ति के मन में निराशा उत्पन्न कर हीनता की भावना भरती है, फलत: व्यक्ति अकर्मण्य एवं आलसी हो जाता है। अपने आपको परिवार एवं धरती का बोझ समझने लगता है। वह ईश्वर एवं स्वयं को कोसता फिरता है, लेकिन उन्हें यदि उपयुक्त वातावरण एवं सम्यक प्रेरणा-प्रोत्साहन मिले, तो अष्टावक्र, शुक्राचार्य, जायसी, सूरदास, रणजीत सिंह, विनोद कुमार मिश्रा, राजेंद्र यादव, हेलेन केलर, थॉमस अल्बा एडिशन, लुई बेल, स्टीफन हार्किंग्स, लारा ब्रिजमेन आदि जैसे लोग जो विकलांग होन के बावजूद जो कर दिखाया वह अत्यन्त सराहनीय है। वह भी कुछ करने का साहस जुटा सकेंगे किन्तु भारतीय समाज उनको केवल बैठकर बेवजह खाने योग्य ही समझता है।

समाज और साहित्य आपस में अंतर संबंध हैं। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। समाज की आवश्यकता को साहित्य भली-भांति समझता है। हिंदी साहित्य के सभी विधाओं में कहीं ना कहीं विकलांगता को समावेशित गया है। विकलांग साहित्य की देन नहीं यद्यपि समाज के दायरे की देन है, जो मानसिक एवं शारीरिक दृष्टि से हमें विकलांग बनाते हैं। विकलांगता जन्म, जन्मांतर या दुर्घटनाग्रस्त हो सकती है।

हिंदी कहानी के आरम्भिक काल से ही विकलांग को लेकर काफी कुछ लिखा जाता रहा है। जिसमें उनकी शारीरिक व मानसिक अक्षमता को प्रकट किया गया है। प्रेमचन्द , जयशंकर प्रसाद, धर्मवीर भारती,अज्ञेय आदि कहानीकारों ने अपनी कहानियों में विकलांगों की समस्या को उठाया है। विकलांगता की समस्या को आगे चलकर पुरुषों के साथ महिला कहानी- कारों ने भी अपनी कहानियों उठाया है। जिनमें मन्नू भंडारी, महादेवी वर्मा, ममता कालिया, क्षमा शर्मा , मैत्रीय पुष्पा, जया जादवानी, कुसुमलता मलिक आदि हैं। इनकी कहानियों के माध्यम से हम जानेंगे कि एक विकलांग व्यक्ति की व्यथा क्या होती हैं, एक विकलांग व्यक्ति को किन-किन समस्याओं सामना करना पड़ता है तथा उनका संघर्षमय जीवन कैसे व्यातीत होता है। उनकी समाज से क्या अपेक्षा है और समाज के पास उसका क्या समाधान हो सकता है। जिसको निम्नलिखित महिला कहानियों के माध्यम से समझने का प्रयास करेंगे-

क्षमा शर्मा की कहानी **'बदल गया रास्ता'** में उन्होंने बताया है कि किस प्रकार से सामाजिक स्तर पर विकलांग व्यक्तियों के साथ भेद भाव किया जाता है। जब राम अपने छोटे भाई श्याम के साथ विद्यालय जाता

है, तो रास्ते में वहां के कुछ शरारती बच्चे राम के पैरों जोकि एक पैर छोटा है, विकलांगता का फायदा उठाकर उसको बेवजह परेशान करते हैं। "वे राम को लंगड़ा लंगड़ा कहकर चिढ़ाने लगे,तो श्याम बस्ता रखकर उसे मारने दौड़ा तो धक्का देकर नीचे गिरा दिया और दोनों के बस्ते उठकर वे भाग गए।" कहानी में यह समस्या केवल राम नामक पात्र तक ही सीमित नहीं है अपितु सम्पूर्ण भारतीय समाज में व्याप्त है।

ममता कालिया का कहानी संग्रह **'सीट नंबर छे'** में **'आजादी'** नामक कहानी में एक बुजुर्ग महिला है। जो एक पैर से अपाहिज है, दूसरे में हमेशा दर्द रहता है। उसका परिवार उसकी तरफ ध्यान नहीं देता है। वह अपने दर्द से परेशान रहती है। जब वह डॉक्टर को दिखाने को कहती है, तो उसका पति कहता है कि तुम्हें कौन सा विवाह रचना है, पैसे की कमी के कारण उसका पति कहता है कि अच्छे डॉक्टर को दिखाने के लिए अच्छी फीस भी लगती है। परिवार में उसकी पोती ही उसे बतियाती रहती है, एक दिन स्वतंत्रता दिवस पर मुन्नी सफेद कपड़े पहन कर जाती है, तो दादी पूछती है आज कौन सा दिन है, मुन्नी कहती है कि आज आजादी का दिन है। वह मुन्नी से आजादी की पुड़िया मांगती हैं, स्कूल से जब मुन्नी वापस आती है, तो वह पुड़िया दादी को देने जाती है, तो देखती है दादी हमेशा के लिए सो चुकी थी उन्हें आजादी मिल चुकी है । कहानी में वृद्ध अपाहिज महिला के साथ जिस प्रकार से व्यवहार किया जाता है, वह पूर्ण रूप से गलत है। वर्तमान समय में न जाने कितनी विकलांग मां बाप को लोग अपने घरों से बाहर निकाल देते हैं।जोकि हमें कहीं ये लोग भीख मांगते वक्त तो कभी छोटे मोटे काम करते दिखते हैं।

इसी प्रकार **मैत्रीय पुष्पा** की कहानी **'सहचर'** है, जोकि एक सहानुभूति विषयक मॉडल पर आधारित है। जिसमें लेखिका ने यह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है कि किस प्रकार एक पिता जिसकी बेटी विकलांग है, उसकी प्रतिभा को नजरंदाज कर उसकी शादी किसी वंशी नामक अनपढ़ पात्र से करा दी जाती है। उसको अपनी पढ़ाई तक पूरी नहीं करने दी जाती है। उसकी शादी केवल यह कहकर कर दी जाती है कि तुम एक विकलांग व्यक्ति हो,जिसको घर में रखना से हमारी इज्जत घटती है।

ममता कालिया की कहानी **'राजू'** में भी एक दिव्यांग व्यक्ति के जीवन का वर्णन किया गया है। उसकी एक आंख पूर्णता खराब है, उससे कुछ दिखाई नहीं देता फिर भी वह दूसरी आंख से देखता है। उम्र के साथ-साथ उसके दूसरे आंख में भी मोतियाबिंद की बीमारी के कारण दिखाई देना बन्द हो जाता है। वह इस कारण उपहास का पात्र बनता है। उसे सभी हैं देखते हैं उसके गुण को कोई नहीं देखता, उसे लोग अपशगुन मानते हैं उसे तथा उसकी माता को भी इसका परिणाम भोगना पड़ता है। एक शादी में जाने के पश्चात शादी के घर वाले कहते हैं कि "ये काना कपूत घर में छोड़कर आती तो एक दिन में तेरा दूध नहीं सूख जाता। विवाह के घर में लाकर खड़ा कर दिया सामने ही इस अंधे को"[2]

वरिष्ठ लेखिका **सिम्मी हर्षिता** की कहानी **अनियंत्रित** का केंद्रीय पात्र मनु शारीरिक और मानसिक दोनों दृष्टियों से विकलांग है। मनु जब अपनी मां के गर्भ में पल रहा होता है, तब उसकी मां गर्भ में कन्या होने के भ्रम में से गर्भ गिराने के अनेक नुस्खे आज़माती हैं। गर्भ तो नहीं गिरा पर मां के कृत्यों का दंड मनु को विकलांगता के रूप में भुगतना पड़ता है। अब विकलांग मां का अस्तित्व परिवार के लिए भाई एवं चिंता का सबक बनाया है। घर के लोगों को प्रतीत होता है कि मनु घर के सम्मान पर गहरे दाग के समान हैं। इस कारण घर में किसी अतिथि के आने पर अबोध बालक मनु को पकड़ या घसीट कर छोटे से स्टोर रूम में बंद कर दिया जाता है। बंद कर दिए जाने के विरोध में मनु अंधाधुंध रोता है। रोते-रोते उसकी हिचकियां बंध जाती हैं और स्टॉल रूम में गर्मी के कारण वह पसीने से सरोवर भी हो जाता है। ऐसे निर्ममता वह भी परिवार के अबोध, असहाय बालक के प्रति अकल्पनीय सी लगती है।

कुसुमलता मलिक की कहानी **'अदायगी'** में लेखिका ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि किस तरह से एक मां बाप की संतान किसी दुर्घटना में विकलांग हो, जाने के पश्चात उसके साथ परिवार के लोग भेदभाव करते हैं। जैसे कहानी की पात्र लतिका के साथ होता है। स्कूल जाते वक्त वह किसी कारणवश चोटिल हो जाती है, जिससे उसकी आंखों चली जाती है। ऐसे में वह दिव्यांग हो जाती है और उसके परिवार वाले उस हीन दृष्टि से देखने लगते हैं। वही पिताजी जो पहले सही होने पर लतिका से रोज़ एक घंटे बतियाया करते थे, अब ऐसी अवस्था में उससे किनारा काटते हैं और कुछ समय पश्चात उसको विकलांग व्यक्तियों के स्कूल में भेजवा देते हैं। उसके बाद उसकी कोई खोज-खबर नहीं लेते हैं परंतु जब लतिका अपने साहस पर अध्यापिका की सरकारी नौकरी पा जाती है तो उसके वही मां बाप जो पूछने को राजी नहीं थे अब उससे मीठा मीठा बोलकर उसके रूपयों से अपना घर बनवाते हैं और बेटे की शादी करते हैं पर शादी में उसी लतिका को नहीं बुलाया जाता है जिसके पैसों से शादी हो रही है। लतिका कहती है कि "आज सब कितने खुश होंगे! मंगल गीत गाए जा रहे होंगे! बधाईयां दी और ली जा रही होंगी! नेग और शगुन बांटे जा रहे होंगे! मेरा तो कोई नेग भी नहीं होगा! मेरा वहां कोई नाम तक नहीं ले रहा होगा! पिता की छोड़ो मां और भाई ने भी बुलाने की पहल नहीं की मुझे।"

ऐसे में हम देखते हैं कि किस तरह से एक दिव्यांग व्यक्ति का फायदा उठाकर उसी की उपेक्षा की जा रही है। जिससे उनमें हीन भावना भर जाती है। लेखिका ने कहानी में लतिका के माध्यम से जो समस्या उभारी है वह आज वर्तमान समाज में भी दिखाई पड़ती है।

कुसुमलता मलिक की कहानी **'गांठ'** में भी एक दिव्यांग व्यक्ति के जीवन की कठिनाइयों का वर्णन किया गया है। कहानी में लेखिका ने दर्शाया है कि परिवारिक स्तर पर दिव्यांग व्यक्तिओं के किस प्रकार से भारी मात्रा में आप दूप हो रहा है। कहानी में चमनों का देवर रोहित जो अंधा है, उसको कुछ दिखाई नहीं पड़ता है। उसको उसकी भाभी नाजायज फायदा उठाने का प्रयास कर उसके नाम की सम्पत्ति भी अपने नाम करवा लेना चाहती है। उससे वह उन कामों को करने के लिए कहती है, जो एक स्त्री विशेष के कार्य होते हैं। जैसे कंडे पथवाना

आदि। रोहित के हिस्से की सम्पत्ति हड़पने के लिए वह उसको कुंआ में धक्का दे देती हैं, पर जैसे-तैसे उसे बाहर निकाल लिया जाता है। " एकाएक तभी किसी ने उसे जोर का धक्का दिया,वह बाल्टी खींचने की बजाय बाल्टी से ही खिंच गया और कुंआ में जा गिरा। वह अपने आंखों से देख पा रहा था कि यह धक्का उसकी भाभी चमनों ने दिया है" । कहानी में जिस समस्या को उठाया गया है, वह आज सम्पूर्ण भारतीय समाज की एक बड़ी भारी प्रवृत्ति बन चुकी है। जो समाज में व्यापक स्तर पर विद्यमान है।

नासिरा शर्मा की कहानी **'गूंगी गवाही'** में लेखिका ने बताया है कि किस प्रकार से समाज एक गूंगा व्यक्ति जोकि विकलांग की श्रैणी में आता है, उसको सामाजिक तौर पर अपनाया नहीं जाता है। उसके द्वारा किये गए प्रत्येक कार्य एवं गतिविधियों की कोई महत्ता नहीं दी जाती है। कहानी में आई गूंगी पात्र चमेली जब चांद के मरने की जानकारी गांव वाले और पुलिस अधिकारियों को अपने हाव भाव से बताने का प्रयास करती है,तो वे लोग केवल इसलिए उसकी उपेक्षा करते हैं कि उस गूंगी को क्या पता होगा। कहानी में उभरी गूंगी की समस्या केवल चमेली की समस्या नहीं है अपितु सम्पूर्ण भारतीय गूंगे विकलांगों की समस्या है।

ठीक इसी प्रकार से **मन्नू भंडारी** ने अपनी कहानी **'खोटा सिक्का'** में बताया है कि जब एक सम्पूर्ण अंग का व्यक्ति किसी दुर्घटना में किसी अंग से विहीन हो जाता है, तो उसके साथ ही काम करने वाले लोग उसके साथ दूसरे तरह का व्यवहार करने लगते हैं। उसे वह अपने समूह में शामिल की बात तो दूर अपने कम्पनी में नौकरी करवाना भी पसन्द भी करते शिवाय इसलिए कि वह विकलांग है।

निष्कर्ष:

विकलांगों की आवश्यकताओं ,योग्यताओं ,आशाओं के बारे में हमारी अज्ञानता और अरुचि ही अक्सर इन्हें समाज पर बोझ बना देती है। इस प्रकार हिंदी कहानी के स्त्री लेखन में विकलांग व्यक्तियों के जीवन के विविध प्रसंगों को केंद्र में रख कर अनेक प्रकार की मार्मिक कहानियों का सृजन किया गया है। इन कहानियों में इस वर्ग के जीवन में आने वाली कठिनाईयों और स्थितियों का क्रमिक अंकन ही नहीं है अपितु यह कहानी पाठक वर्ग को विचार व मंथन करने को मजबूर करती हैं। इस वर्ग के प्रति अपनी सोच को पूर्ण ग्रहण से मुक्त हो कुछ अधिक मात्रा में संवेदनशील होने का आग्रह करती हैं ।

सन्दर्भ सूची:-

1. डॉ संगीता परमानंद, विकलांगता का समाजशास्त्रीय अध्ययन, लता साहित्यसदन, गाजियाबाद - 2017, पृष्ठ संख्या 56
2. क्षमा शर्मा की चुनिंदा बाल कहानियां - नेहरू बाल पुस्तकालय, पृष्ठ संख्या 9

3. ममता कालिया की प्रतिनिधि कहानियां, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 30
4. कुसुमलता मलिक, स्वराज प्रकाशन,नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या -70

****